स्वरूप भरना पड़ता है।

होरी सामान्यतः छल, कपट से दूर रहने वाला आदमी है। किंतु उसमें कृषक जन सुलभ दोष भी है। बाँसों की बिक्री में भाइयों से दर कम बताना, वह स्वयं कर्ज में डूबा हुआ है वह इस कर्ज से मुक्ति के लिए छटपटाता रहता है। वह धनिया से कहता है "न जाने कब इन महाजनों से गला छूटेगा" तब होरी कहता है— "इस जन्म में तो कोई आशा नहीं है भाई। हम राज नहीं चाहते, भोग विलास नहीं चाहते, खाली मोटा झोटा पहनना और मोटा-झोटा खाना और मरजाद के साथ रहना चाहते हैं, वह भी नहीं सधता।"

वास्तव में होरी का देवत्व ही उसके दुःख का कारण है। होरी अत्याचार का सामना आदर्शवादी बनकर करता है। वह संघर्ष नहीं करना चाहता। हालत चाहे जैसी हो, वह खैरियत मनाता रहता है। वास्तव में वह कायर नहीं है। राय साहब के पठान बना मेहता को वह उठाकर पटक देता है। जमींदारों की परीक्षा में वह पास हो जाता है लेकिन गृहस्थ जीवन में वह दब्बू बन जाता था। वह अक्सर सोचता था — जब और कोई कुछ बोलता ही नहीं तो वही आग में क्यों कूदे, जो सबके सिर पर पड़ेगी, वह भी झेल लेगा। वह विरोधी परिस्थितियों का विरोध नहीं करता बल्कि वह सीधी गाय की तरह परिस्थितियों को ओढ़ता हुआ चलता है।

होरी का संपूर्ण जीवन संघर्षमय रहा। वह नारियों की तरफदारी करता है। झुनिया पर पहले वह जरूर क्रोधित हुआ था, बाद में उसका हृदय पिघल गया। वह उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहता है — "डरो मत बेटी, डरो मत, तेरा घर है, तेरा द्वार है, तेरे हम हैं। आराम से रह। जैसी तू भोला की बेटी है, वैसी ही मेरी बेटी है। हम जीते हैं, किसी बात की चिंता मत कर। हमारे रहते तुम्हें कोई तिरछी आँख से भी न देख सकेगा। वह सब देंगे, तू खातिर जमा रख।" सीलिया को भी आश्रय होरी देता है। झुनिया के लिए वह चौधरी पर बिगड़ पड़ता है। किंतु गुस्से में कभी-कभी वह धनिया को पीट भी देता है। और मजबूर होने पर अपनी बेटी रूपा को एक चालीस साल आदमी को बेच भी देता है। यह एक कृषक जीवन की मजबूरी है जो एक किसान को कितना कमजोर बना देती है।

P.T.O

(2)

यह बात जन्म-जन्मांतरों से उसकी आत्मा का अंश बन गयी थी। भोला के संबंध में वह सोचता है— "ऐसा हुआ, दस-पाँच मन भूसा चला जाएगा, बेचारे को संकट में पड़कर अपनी गाय तो न बेचना पड़ेगा।"

किसान पक्का स्वार्थी होता है। उसकी गाँठ से पैसे बड़ी मुश्किल से निकलते हैं। भाव-ताव में भी वह चौकस होता है। ब्याज की रकम भी एक-एक पाई छुड़ाने के लिए वह घंटों चिरौरी करता है, जब तक कि उसको पक्का विश्वास न हो जाए। उसका संपूर्ण जीवन स्थायी रूप से जमीन से जुड़ी होती है। होरी में भी ये सारे गुण हैं। वह भाग्यवादी है, उसका विश्वास है— छोटे-बड़े सभी भगवान के घर से आते हैं, उन्होंने पूर्व में जैसे कर्म किए, आनंद भोग रहे हैं, हममें कुछ नहीं संचा, तो भोगें क्या। गोदान के नायक होरी की करुणा जिस धर्म और अर्थ के द्वन्द्व को रूपायित करती है, उसमें धर्म तो पराजित नहीं होता अर्थ दारिद्र्य बनकर उसके जीवन को ही निगल लेता है।

होरी को गाय की बड़ी लालसा थी। यही गाय उसके मुसीबत का कारण बन गयी थी। गाय की प्राप्ति का सुख होरी के लिए आहार न था, इसके द्वारा वह अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना चाहता था। होरी की यह लालसा उसके मरने के समय तक पूरी न हो सकी।

होरी एक सरल प्रकृति का इंसान था। उसका एक संयुक्त परिवार था, जो टूट चुका था। हीरा के लिए उसके दिल में अपार प्यार था। किंतु हीरा ने उसकी गाय को जहर देकर मार डाला। होरी उस विकट परिस्थिति में भी भाइयों को बचाता है। हीरा के घर की तलाशी नहीं होने देता। उसे अपने बच्चों से ममता है। वह खुद कष्ट में रहता है किंतु उन्हें कष्ट नहीं होने देता। गोबर झुनिया को छोड़कर भाग जाता है, फिर भी होरी को क्रोध नहीं आता। वह सोचता है— कैसी नादानी की। हम उसके दुश्मन थोड़े ही थे। जब चली आ चुकी बात हो गयी तो उसको निभाना पड़ता है, किंतु न्याय के लिए वह बिरादरी से नहीं डरता। वह विचारों में परिपक्व है। उसे बिरादरी का भय, जमींदार का भय, धर्म का भय, समाज का भय, उसे सारा समाज ... लगा रहता है। झुनिया के कारण

P.T.O

होरी जायदाद को औलाद को [illegible] मानता है
वह अपनी ही नहीं, राय साहब की जायदाद के
बारे में भी यही ख्यालात पेश करता है लेकिन आज
उसकी जायदाद छीन ली जाती है और वह मजदूर
बनने को अभिशप्त हो जाता है। होरी उन किसानों
का प्रतिनिधि है जिनकी जमीन हाथों से निकली
जा रही और वे मजदूरी करने के लिए मजबूर
हो रहे हैं। लेकिन मजदूरी ऐसी है कि [illegible] लेन
में आदमी की हड्डियाँ चूर हो जाए। वह होरी
जिसने मेहता को उठाकर दे मारा था, आज
[illegible] में आग में गिरा पड़ा है। उसका शारीरिक
[illegible] मजदूरों की सेना में [illegible], आज वह अकेला है
नाम पर रहता है, जहाँ जीवन की कोई आशा नहीं।
जिस दिन होरी मरने को था, उसकी मानसिकता
[illegible] थी — जीवन के सारे संकल्प, सारी निराशा
आँखें उसके आँखों पर तैर रही थी, कौन कहता है,
जीवन संग्राम में वह हारा है, यह उल्लास, यह
यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों
में उसकी विजय है, उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी
विजय पताकाएं हैं।

P.G. Semester - III
CC - 11
"Hori ka charitra chitran"